eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 02, July 2020

हजारी प्रसाद द्विवेदी के उपन्यासों में कथा आख्यायिका की परम्परा

[1]डॉ0 मंजुला यादव
[1]एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, नवयुग कन्या महाविद्यालय, राजेन्द्र नगर, लखनऊ

Received: 13 July 2020, Accepted: 27 July 2020, Published on line: 30 Sep 2020

Abstract

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने अपने उपन्यासों में प्रागैतिहासिक युग से लेकर मध्यकालीन सामाजिक, सांस्कृतिक युग का चित्रण किया है। इसकी सृष्टि के लिए उन्होंने लिखित व अलिखित दोनों सामग्रियों का प्रयोग किया है परन्तु उनकी दृष्टि इतिहास से अधिक लोक गाथाओं और लोक परम्पराओं पर है। मध्ययुगीन समाज में जो कुरीतियाँ व्याप्त थीं उनको ही लक्ष्य करके उपन्यासकार ने कहा है कि कभी भी मानव की सहजात प्रवृत्तियों को दबाने का प्रयास नहीं करना चाहिए। हजारी प्रसाद द्विवेदी की औपन्यासिक रचना प्रक्रिया में इतिहास और कल्पना का जो मणि–कांचन योग उपस्थित हुआ है वह कथा–आख्यायिका के मिश्रित शिल्प एवं शैली का परिणाम है। इनमें 'गप्प' का ठेठ मिजाज 'गल्प' की साहित्यिक रचनाशीलता में ढलता हुआ दिखाई पड़ता है और 'पुनर्नवा' इसका सर्वोत्तम उदाहरण है।

मुख्य शब्द– कथा–आख्यायिका, लोकोन्मुख, इतिहास बोध, रूप विन्यास, उपजीव्य, चरितकाव्य, अलंकृत गद्यकाव्य, उच्छ्वास, कवित्वमय, इतिवृत्त, गवेषणा, वृहत्कथा, निष्प्राण, सन्निवेश, अनुवर्तक, उद्भावक, मणि–कांचन, गल्प।

Introduction

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के उपन्यासों का अध्ययन करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि उनकी रचना प्रक्रिया अंग्रेजी उपन्यासों के अनुकरण पर न होकर कथा–आख्यायिका की भारतीय परम्परा के मेल से है। इसमें ऐसे अनेक सूत्र बिखरे पड़े हैं जिनके आधार पर यदि कोई चाहे तो स्वतंत्र रूप से उन पर विचार कर सकता है। आचार्य द्विवेदी के उपन्यास पाण्डित्य की लोकोन्मुखता, निबन्धत्व, परम्परा का नैरन्तर्य एवं प्रखर इतिहास बोध जैसी विशिष्टताओं के चलते आधुनिक औपन्यासिक रचनाशीलता से अपनी अलग पहचान बनाते हैं। इनमें आधुनिक उपन्यासों का रूप विन्यास अपने आप में बहुत महत्त्वपूर्ण नहीं है बल्कि वह एक गत्यात्मक इतिहास बोध को लिये हुए है। आकस्मिक नहीं है कि कई बार आलोचकों को उनके उपन्यासों में रूप बन्ध सम्बन्धी असंगतियाँ भी दिखायी पड़ती हैं। दरअसल द्विवेदी जी के उपन्यास भारतीय लेखक की परिकल्पना को चरितार्थ करने वाले तथा आधुनिक कथा साहित्य को भारतीय परम्परा के स्वाभाविक विकास के रूप में देखने के रचनात्मक प्रयास हैं।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी मध्यकालीन हिन्दी साहित्य को लोक साहित्य घोषित करते हैं और प्राचीन कथा–आख्यायिका की भारतीय परम्परा को उसका उपजीव्य स्वीकार करते हैं। अकारण नहीं

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 02, July 2020

है कि जिस समय हिन्दी के मान्य विद्वानों के बीच 'रासो' की प्रामाणिकता को लेकर लम्बी बहस चल रही थी, उस समय आचार्य द्विवेदी ने रासो में इतिहास की संगति खोजने के प्रयास को निरर्थक बताते हुए उसका साहित्यिक मूल्यांकन किया। उन्होंने स्थापित किया कि रासो काव्यों का मूल चरित्र वीरगाथात्मक नहीं, लोक गाथात्मक है और उन्होंने यह भी लक्षित किया कि ''प्रायः सभी चरितकाव्यों ने अपने को 'कथा' कहा है। पुराने साहित्य में कथा शब्द का व्यवहार स्पष्ट रूप से दो अर्थों में हुआ है। एक तो साधारण कहानी के अर्थ में और दूसरा अलंकृत काव्य रूप के अर्थ में। साधारण कहानी के अर्थ में तो पंचतंत्र की कथाएँ भी कथा है, महाभारत और पुराणों के आख्या भी कथा है और सुबाहु की वासवदता, बाण की कादम्बरी, गुणाढ्य की वृहत्कथा आदि भी कथा है। परन्तु विशिष्ट अर्थ में यह शब्द अलंकृत गद्य काव्य के लिए प्रयुक्त हुआ है।''1

दण्डी, सुबाहु और बाणभट्ट संस्कृत कथा के तीन प्रसिद्ध लेखक हैं जो अपनी कथावस्तु के लिए 'वृहत्कथा' के ऋणी हैं। गद्यकाव्य लिखने की कथा अत्यन्त प्राचीन है। महाक्षत्रप रुद्रदामन द्वारा खुदवाया गया गिरनार का शिलालेख स्वयं अलंकृत गद्यकाव्य का एक अच्छा नमूना है। द्विवेदी जी ने लिखा है कि चरितकाव्य को कथा कहने की प्रणाली बहुत बाद तक चलती रही। तुलसीदास जी का 'रामचरितमानस' 'चरित' होने के साथ ही कथा भी है। विद्यापति ने अपनी पुस्तक 'कीर्तिलता' को कहानी (पुरिस कहाणीं हउं कहउं) कहा है। रासो में भी कई बार काव्य को 'कीर्तिकथा' कहा गया है। इस प्रकार 'कथा' शब्द बहुत व्यापक अर्थों में प्रयुक्त जान पड़ता है।

द्विवेदी जी के उपन्यास 'बाणभट्ट की आत्मकथा' का वस्तुविन्यास 'कादम्बरी' और 'हर्षचरित' की कथा–आख्यायिका की मिश्रित शैली पर आधारित है। आख्यायिका उच्छ्वासों के प्रकरण विभाग में बँधी हुई ऐतिहासिक कथावस्तु पर आधारित होती है और 'कथा' की कथावस्तु का आधार काल्पनिक होता है। एक घटना प्रधान होती है तो दूसरी वर्णन प्रधान। 'अग्निपुराण' के अनुसार – ''आख्यायिका उसे कहते हैं जिसमें कन्याहरण, संग्राम, विप्रलम्भ आदि विपदाओं का वर्णन होता है तथा रीति और वृत्ति अति व्याप्त शैली में रहती है, उच्छ्वास नामक परिच्छेद होता है, चूर्णक शैली की बहुलता होती है तथा वक्त्र एवं अपवक्त्र नाम के श्लोक होते हैं और कथा वह है जिसमें कविवंश का आरम्भ में संक्षिप्त वर्णन होता है, मुख्यार्थ की अवतारणा के लिए भूमिका रूप में दूसरी कथा योजना की जाती है और परिच्छेद का विभाग नहीं होता है किन्तु कहीं–कहीं पर लम्बक होते हैं।''2

संस्कृत के अलंकारवादी आचार्यों ने 'कथा' शब्द का प्रयोग एक निश्चित काव्य रूप के अर्थ में किया है। ''भामह ने सुन्दर गद्य में लिखी सरस कहानी वाली रचना को आख्यायिका कहा है। यह उच्छ्वासों में विभक्त होती थी और इसका कहने वाला और कोई नहीं स्वयं नायक होता था। इसमें बीच–बीच में वक्त्र और अपवक्त्र छन्द आ जाते थे। इसमें कन्या हरण, युद्ध विरोध और अन्त में नायक की विजय का उल्लेख भी होता था। कथा इससे थोड़ा भिन्न हुआ करती थी। उसमें वक्त्र और अपवक्त्र छन्द नहीं होते थे और न उसका विभाजन ही उच्छ्वास संज्ञक अध्यायों में हुआ करता था। इसकी कहानी स्वयं नायक नहीं कहा करता था, बल्कि किन्हीं दो व्यक्तियों की बातचीत के रूप में कह दी जाती थी।''3

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 02, July 2020

दण्डी, भामह के इस मत से बहुत सहमत नहीं दिखायी पड़ते। उनके अनुसार – ''कथा और आख्यायिका मूलतः एक ही श्रेणी की रचनाएँ हैं। कहानी नायक कहे या कोई और कहे, अध्याय का विभाजन हो या न हो, अध्यायों का नाम उच्छ्वास रखा जाय या लम्भ रखा जाय, बीच में वक्त्र या अपवक्त्र छन्द आते हों या न आते हों। इससे कहानी में क्या अन्तर आ जाता है? इसलिए इन ऊपरी भेदों के कारण कथा और आख्यायिका में अन्तर नहीं करना चाहिए।''4 हजारी प्रसाद द्विवेदी को भी लगता है कि दण्डी के इस मत से सहमत होते हुए अपने उपन्यासों की रचना–प्रक्रिया में आवश्यकतानुसार कथा–आख्यायिका के मिश्रित शिल्प का उपयोग किया है। आचार्य द्विवेदी की एक मुख्य विशेषता यह है कि वह हर वस्तु या चीज को भारतीयता से जोड़कर देखने के पक्ष में हैं। उन्होंने अपने उपन्यासों में घटना व कल्पना दोनों का समावेश किया है। घटनाएँ भी उस तरह की नहीं हैं जो आख्यायिकाओं में पायी जाती हैं क्योंकि इनके चारों उपन्यास इतिहास की पृष्ठभूमि में लिखे गये हैं। वस्तुतः इसमें इतिहास को केवल आधार बनाया गया है, उनका मुख्य उद्देश्य तत्कालीन युग का सजीव चित्रण करना है।

'हर्षचरित' बाणभट्ट का प्रथम ऐतिहासिक गद्यकाव्य है। इसकी प्राथमिकता को बाण ने स्वयं ही ''करोम्याख्यायिकाम्मौघौ जिहवाप्लवनचापलम्'' इन शब्दों में स्वीकार किया है। बाण ने इसे आख्यायिका कहा है, उच्छ्वासों में विभक्त इस आख्यायिका में महाकवि ने स्थाव्वीश्वर के महाराज हर्षवर्धन के जीवन–चरित को चित्रित किया है। 'हर्षचरित' में ऐतिहासिक विषय पर गद्यकाव्य लिखने का प्रथम प्रयास किया गया है। यद्यपि यह एक ऐतिहासिक गद्यकाव्य है तथापि इसकी भाषा पूर्णतया कवित्वमय है। इसमें इतिहास की भाँति इतिवृत्तों का उल्लेख सीधी–सादी भाषा में न होकर आलंकारिक रूप में और कल्पना–प्रचुर शैली में हुआ है। 'हर्षचरित' आधुनिक शुष्क–घटना प्रधान इतिहास नहीं, प्रत्युत विशुद्ध काव्यशैली में उपन्यास एक वर्णन प्रधान काव्य है।''5

'कादम्बरी' कथा है। बाण ने स्वयं प्रस्तावना के अन्तिम पद्य में ''घिया निबद्धेयमतिद्वयी कथा'' कहकर इसे 'कथा' के रूप में स्वीकार किया है। ''कादम्बरी के विषय में स्वभावतः एक जिज्ञासा होती है कि इसकी प्रेरणा बाण को कहाँ से मिली? क्या यह बाण के मस्तिष्क की अपनी उपज है अथवा इसका भी कोई प्राचीन उपजीव्य है? सूक्ष्म गवेषणा के बाद प्रायः समालोचकों ने इस निश्चय पर पहुँचने का प्रयास किया है कि बाण को कादम्बरी की कथा लिखने की प्रेरणा गुणाढ्य की 'वृहत्कथा' से मिली होगी। यद्यपि पैशाची भाषा में निबद्ध 'वृहत्कथा' अब उपलब्ध नहीं है फिर भी उसके संस्कृत रूपान्तर 'कथासरित्सागर' में आयी हुई राजा सुमना की कथा और कादम्बरी की कथा में बहुत कुछ समानता पायी जाती है। सम्भव है कि बाण ने अपनी कादम्बरी की मूल घटनाओं को 'वृहत्कथा' से लिया हो और अपनी अलौकिक काव्य–प्रतिभा की मधुर कल्पना से 'वृहत्कथा' के निष्प्राण घटनाचक्रों और पात्रों में सजीवता लाकर उन्हें ही नवीन कलेवर दे दिया हो।''6 दण्डी का 'दशकुमारचरित' गद्यकाव्य त्रयी में अपने कथानक की विविधता और घटनाओं की विचित्रता में अपना सानी नहीं रखता। सम्भवतः दण्डी को अपने कौतूहलपूर्ण रोचक आख्यानों को काव्य का रूप देने की प्रेरणा 'गुणाढ्य' की 'वृहत्कथा' से मिली हो। इसमें पुष्पपुर नगर के दस कुमारों के विचित्र चरित्र का विलक्षण चित्रण है। ''रोमांचकारी साहसिक घटनाओं के चित्रण से दशकुमार चरित्र की कथावस्तु का आधार नितान्त भौतिक प्रतीत

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 02, July 2020

होता है। छल–कपट, मार–काट, झूठ–सच इन सबसे कथानक और घटनाओं को सजाकर दण्डी ने अपनी कृति में यथार्थवाद का दिग्दर्शन कराया है। दण्डी ने राजनीति के दाँव–पेंच के साथ–साथ समाज में परिव्याप्त वेश्यावृत्ति, ढोंगियों के ढोंग और निम्न स्तर के छल–कपटों का भी निकट से अध्ययन कर उनका स्पष्ट विवरण प्रस्तुत किया है। कथाओं की तो मानो यह पिटारी ही है। ..... एक कथा में दूसरी अन्य कथाओं का सन्निवेश कर इस दिलचस्पी के साथ किया गया है कि पाठक एक बार मूलकथा को भूल जाने के लिए विवश हो जाता है।''7

इस प्रकार इन तीनों ग्रन्थों के आधार पर हम कह सकते हैं कि 'कथा' की कथावस्तु कवि–कल्पित होती है, आख्यायिका ऐतिहासिक वृत्त पर अवलम्बित होती है। जहाँ कथा का वक्ता नायक से भिन्न कोई दूसरा व्यक्ति होता है, वहीं आख्यायिका में कवि या नायक स्वयं अपनी अनुभूत कहानी कहता है। बाण ने स्वयं कादम्बरी को स्पष्ट रूप से 'कथा' और 'हर्षचरित' को 'आख्यायिका' स्वीकार किया है।

आचार्य द्विवेदी के उपन्यास हिन्दी के ऐतिहासिक उपन्यासों की परम्परागत विरासत के अनुवर्तक भी हैं और नवीन परम्पराओं के उद्भावक भी। उन्होंने इतिहास को नवीन दृष्टि से उद्भावक देखने का प्रयत्न किया है। इस तरह द्विवेदी जी की उपन्यास कला प्राचीन और नवीन के संगत पर समासीन है। यही कारण है कि इसके पात्र सामयिक यथार्थ की विभीषिका और तज्जन्य कुण्ठा को मानवीय आदर्शों के गंगा जल में प्रवाहित करके जिजीविषा तथा निर्माण का पुण्यार्जन करते हैं।

आचार्य द्विवेदी के चारों उपन्यास इतिहास से सम्बन्धित हैं किन्तु इसमें कल्पना का समावेश सर्वाधिक है। ''इनकी कृतियों में तत्कालीन युग का सजीव चित्रण हुआ है, किन्तु द्विवेदी जी का उद्देश्य तत्कालीन युग की सजीवता की प्रतिष्ठा करना नहीं है, वरन् वह अतीत के उदात्त से वर्तमान के अनुदात्त का संस्कार करने के पक्षपाती है। उनकी दृष्टि अतीत से होती हुई युग यथार्थ पर आकर ठहरती है। इतिहास उनके लिए साध्य नहीं साधन है। उनका साख्य है, वर्तमान, युग–यथार्थ। युग–यथार्थ की अनेक समस्याओं तथा विकृतियों का समाधान उनको अपने युग में दिखलायी नहीं पड़ता, एतदर्थ वह अतीत की गहराइयों में झाँकते हैं और अतीत को अपने आदर्शों के अनुरूप ढालते हैं। इस प्रकार वह न केवल वर्तमान के ही, वरन् अतीत के स्रष्टा भी प्रमाणित होते हैं। सृजन की इस प्रक्रिया में उनको कल्पना का पर्याप्त आश्रय लेना पड़ा है। फलतः इनकी औपन्यासिक कृतियों में इतिहास तथा कल्पना का मणि–कांचन संयोग हो गया है।''8

आचार्य द्विवेदी की कल्पना भी निराधार नहीं होती, बल्कि उसके लिए भी किसी न किसी ठोस आधार का सहारा लेकर ही वह कल्पना को प्रकट करते हैं। द्विवेदी जी ने अपने सम्पूर्ण उपन्यास में नारी को महिमामयी रूप में दिखाने का प्रयत्न किया है। उन्होंने अपने नारी पात्रों को देवालयों में पूजा के योग्य न स्वीकार करें, उनमें गौरव एवं स्वाभिमान की भावना भरी है। नारी पात्र चाहे समाज के उपेक्षित या निम्न वर्ग के ही क्यों न हों, नारी जाति के प्रति द्विवेदी जी की पवित्र उच्च विचारधारा के दर्शन हमें सम्पूर्ण उपन्यास में पद–पद पर होते हैं।

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 02, July 2020

आचार्य द्विवेदी ने अपने सभी उपन्यासों में धार्मिक आस्था को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है किन्तु इनका धर्म मन्दिर, मस्जिद या गिरजाघरों तक सीमित नहीं है। धर्म के वाह्य एवं आडम्बरपूर्ण स्वरूप पर द्विवेदी जी की आस्था नहीं। वे धार्मिक मठाधीश जो धर्म के नाम पर जनता को बेवकूफ बनाने का प्रयास करते हैं, उन पर द्विवेदी जी का विश्वास नहीं है। उन्होंने उपन्यास में भागवत धर्म के साथ शैव एवं बौद्धों की महायान शाखा की उपासना पद्धति के विवरण सर्वत्र दिये हैं। द्विवेदी जी ने सौन्दर्य का भी सूक्ष्म रूप से विवेचन किया है। उनका सौन्दर्य दर्शन पवित्रता की भूमि को छूता हुआ चित्त को आह्लादित करता है। इनकी दृष्टि में नारी का सौन्दर्य शाश्वत है। वे करुणा और दुःख के सागर में डूबी नारी में भी अप्रतिम सौन्दर्य के दर्शन करते हैं तो वृद्ध नारी में भी मनोहर एवं नवीन सौन्दर्य की अनुभूति करते हैं। उनके सौन्दर्य वर्णन को पढ़कर हमें काव्यगत आनन्द की अनुभूति होती है। इस प्रकार हम देखते हैं कि हजारी प्रसाद द्विवेदी की औपन्यासिक रचना प्रक्रिया में इतिहास और कल्पना का जो मणि–कांचन योग उपस्थित हुआ है। वह कथा–आख्यायिका के मिश्रित शिल्प एवं शैली का परिणाम है। इनमें 'गप्प' का ठैठ मिजाज 'गल्प' की साहित्यिक रचनाशीलता में ढलता हुआ दिखायी पड़ता है और 'पुनर्नवा' इसका सर्वोत्तम उदाहरण है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिन्दी साहित्य का आदिकाल
2. पं0 रमाकान्त झा, अग्निपुराण, 336
3. पं0 रमाकान्त झा, काव्यालंकार, 1
4. पं0 रमाकान्त झा, काव्यादर्श, 1
5. पं0 रमाकान्त झा, कादम्बरी, शुकनासोपदेशः
6. पं0 रमाकान्त झा, वही
7. पं0 रमाकान्त झा, वही
8. डॉ0 नत्थन सिंह, पुनर्नवा पुनर्मूल्यांकन